हिंदी भाषा का उच्च माध्यमिक स्तर पर स्थान

DR.JOTSNA KAMBLE

प्रस्तावना

- महाराष्ट्र मे त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रथम भाषा(मातृभाषा) द्वितीय भाषा(हिंदी) और तृतीय भाषा(अंग्रेजी) के रूप मे अध्यापन होता है| महाराष्ट्र मे आमतौरपर मराठी मातृभाषा है|हिंदी मध्यम मे प्रथम भाषा हिंदी होती है| भारत एक विशाल बहुभाषी देश है| भारथ मे १८ भाषा भाषायें बहुतही विकसित भाषायें है| त्रिभाषा सूत्रका सीधा,सरल अर्थ है तीन भाषा का अध्ययन करना|

प्राथमिक स्तर के उद्देश

महाराष्ट्र में आमतौर पर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन होता है|

❖ उद्देश ÷

१).हिंदी शब्द शब्दों का मानक उच्चारण|

२).आसान हिंदी में संभाषण|

३).आसान हिंदी में पत्र-लेखन|

उच्च प्राथमिक स्तर के उद्देश (५ वी से ७ वी तक)

❖उद्देश÷

१).छात्रों में हिंदी के मानक उच्चारणो का विकास करना|

२).छात्रों में शब्द भंडार बढाना|

३).छात्रों में राष्ट्रीय भावना निर्माण करना|

माध्यमिक स्तर के उद्देश

❖उद्देश:-

१).छात्रों को हिंदी में श्रवण,आकलन,विचारविनिमय क्षमता विकास करना|

२).शब्द संपत्ती समृद्ध करना|

३).हिंदी में शुद्ध उच्चारण,सरल विषय संभाषण करना|

उच्च स्तर पर महाविद्यालयों में शिक्षा

- महाराष्ट्र में महाविद्यालयों की शिक्षा में, विश्वविद्यालयों की शिक्षा में हिंदी अनिवार्य नही है| उच्च स्तर पर हिंदी का वैकल्पिक विषय है| यदि छात्र चाहते है तो वे हिंदी का अध्ययन महाविद्यालयों में और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिंदी एक वैकल्पिक विषय के नाते रही है| यहाँ हिंदी का अध्ययन प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की तरह अनिवार्य नही है|

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

कक्षा **6** वी से **8** वी तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है प्राथमिक स्तर के बच्चों को भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराना चाहिए तथा इसके साथ ही साहित्य से भी परिचित कराना चाहिए अतः इस स्तर पर भाषा शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होनी चाहिए_

- छात्रों को हिंदी की पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से मानव उपयोगी ज्ञान कराना।
- छात्रों को शब्दों के शुद्ध उच्चारण शुद्ध वर्तनी वाक्य रचना के नियम एवं विराम चिन्हों के प्रयोग का स्पष्ट ज्ञान कराना।
- छात्रों में सुंदर लेखन एवं व्याकरण सम्मत (पूर्ण) वाक्य रचना के कौशल का विकास करना।
- छात्रों में उचित ध्वनि प्रवाह एवं धैर्य के साथ कौशल का विकास करना।
- छात्रों में मातृभाषा एवं उसके साहित्य के अध्ययन के प्रति रूची का विकास करना।
- छात्रों से दूसरों के द्वारा मौखिक या लिखित रूप में अभिव्यक्त विचारों को जानने की रूचि का विकास करना।
- छात्रों में भाषा एवं उसके साहित्य के प्रति आदर पूर्ण भाव का निर्माण करना।

III. उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के उद्देश्य

कक्षा 9 से 10 को उच्च माध्यमिक या माध्यमिक शिक्षा भी कहा जाता है इस स्तर तक भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो जाता है मध्यमिक शिक्षा अधिकतर बच्चों की पूर्ण शिक्षा होती है इसीलिए इस स्तर पर बच्चों को भाषा के व्यवहारिक प्रयोग में समर्थ या निपुण बना देना चाहिए। साहित्यिक भाषा का भी ज्ञान करा देना चाहिए इसके अतिरिक्त उन्हें व्याकरण का अभी व्यवस्थित ज्ञान करा देना चाहिए। एवं उच्च संप्रेषण कौशल विकसित कर देना चाहिए अतः इस दृष्टि से इस स्तर पर भाषा शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए।

१. छात्रों में पठन कला को निपुणता का विकास करना चाहिए।
२. छात्रों को उचित गति के साथ लिखने का अभ्यास कराना।
३. छात्रों को क्षेत्रीय लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संपूर्ण ज्ञान कराना।
४. छात्रों को निबंध, संवाद, सारांश, पत्र इत्यादि लिखने की कला कुशलता उत्पन्न करने का प्रयास करना।
५. छात्रों को व्याकरण संबंधी नियमों का पूर्ण ज्ञान कराना।
६. छात्रों में मौन वाचन की आदत का विकास करना तथा मौन वाचन के माध्यम से तथ्यों को ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करना।
७. छात्रों में भाषा के अधिक से अधिक अध्ययन की प्रेरणा उत्पन्न करना।
८. छात्रों में व्याकरण संबंधी सूत्रों के उच्चारण एवं सृजनात्मक क्षमता की वृद्धि करना।
९. छात्रों में चिंतन की प्रवृत्ति का विकास करना।
१०. छात्रों को भाषा के व्यवहारिक विश्लेषण में निपुण बनाना।
११. छात्रों को व्यवहारिकता का ज्ञान कराना तथा अन्य विषयों का साहित्यिक अध्ययन कराना।

उच्च माध्यमिक स्तर के उद्देश

१).छात्रों की श्रवण,आकलन,और विचारविनिमय करने की क्षमता का विकास करना|

२).भाषा की संरचना और व्याकरण के मूलतत्वो के ज्ञान का विस्तार करना|

३).छात्रों के शब्द भंडार की अभिवृद्धी और उसके यथोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना|

४).हिंदी में शुद्ध उच्चारणसहित प्रभावपूर्ण संभाषण करने की अपक्षमता का क्षमता का विकास करना|

५).छात्रों की लेखन क्षमता का विकास करना|

६).हिंदी में ललित साहित्य के अध्ययन एवं रसास्वादन की प्रवृत्ती को प्रोत्साहित करना|

७).साहित्य की विविध विषयों से परिचय कराना|

८).छात्रों की व्यावहारिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग की क्षमता का विकास करना|

९).छात्रों के मन में जीवन मूल्य,भारत की समन्वयात्मक संस्कृती तथा राष्ट्रीय भावना का पोषण करना|